प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 24.10.67

ओमशांति। रुहानी बाप रुहानी बेहद के बच्चों प्रति समझाय रहे हैं। यानी अपनी मत दे रहे हैं। यह तो जरूर समझते हो कि हम जीवात्माएं हैं परंतु निश्चय तो आत्मा का करना है ना। आगे जीव निश्चय था। अब आत्मा निश्चय करना है। यह हम कोई नया स्कूल नहीं पढ़ते। यह हर 5000वर्ष के बाद पढ़ने आते हैं। बाबा पूछते हैं ना आगे कब पढ़ने आये हो। तो सभी कहते हैं हर 5000वर्ष बाद आते हैं। हर 5000वर्ष बाद पुरुषोत्तम संगमयुगे बाबा के पास आते हो। यह तो याद होगा ना कि यह भी भूल जाते है। स्टुडेंट को तो जरूर याद आवेगा ना। एमऑब्जेक्ट तो एक ही है। जो भी बच्चे बनते हैं ,दो दिन का बच्चा हो वा पुराना हो ;परंतु एमऑब्जेक्ट एक ही है। कोई को भी कस नहीं लगती। कसस कहा जाता है आमदनी को। कस घाटे को कहा जाता है। यहां कोई को पढ़ाई में घाटा नहीं हो सकता। पढ़ाई में इन्कम ही होती है। बाकी थोड़ा वा बहुत पुरुषार्थ पर मदार है ;परंतु है इन्कम। हर एक पढ़ाई में इन्कम है। ग्रंथ बैठकर पढ़कर सुनाओ और कमाई। झट शरीर निर्वाह निकल आवेगा। साधु बना ,एक/दो शास्त्र बैठ सुनाया, इन्कम हो जावेगी। अभी यह भी सोर्स ऑफ इन्कम है। हर एक बात में इन्कम चाहिए ना। पैसे हैं तो कहां भी घूम–फिर आओ। तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको बहुत अच्छी पढ़ाई पढ़ाते हैं, जिससे 21जन्मों की इन्कम मिलती है। यह इन्कम ऐसे है जो हम सदा सुखी बन जाते हैं। कब बीमार नहीं होंगे। सदा अमर रहेंगे। यह निश्चय करना होत है। ऐसे2 निश्चय रखने से तुमको हुल्लास आवेगा। नहीं तो कोई न कोई बात में घुटका आता रहेगा। अंदर में सुमिरण करना चाहिए हम बेहद के बाप से पढ़ रहे हैं। भगवानुवास यह जो गीता है, गीता का भी युग आता है ना। सिर्फ भूल गए हैं। यह है 5 युग वा $4^{1/4}$ युग भी कह सकते हैं। यह संगमयुग बहुत छोटा है। वास्तव में सवा भी नहीं कहेंगे। परसेंटेज लगाय सकते हैं। तो भी आगे.....बतलाने का नूंध है ना। तुम सभी आत्माओं में भी पार्ट का नूंध है, जो रिपीट हो रही है। तुम जो सीखते हो वह भी रिपीटीशन है ना। रिपिटीशन का राज का अभी तुम बच्चों को मालूम हुआ है। कदम2 पर पार्ट बदलता जाता है। एक सेकेंड न मिले दूसरे सेकेंड से। टाइम बदलता जाता है। आजकल तो सेकेंड भी बदलता रहता है। सेकेंड भी बताते रहते हैं। इतने वर्ष ,इतने मास ,इतने दिन ,इतने घंटे,इतने मिनट्स, इतने सेकेंड्स। एक सेकेंड न मिले दूसरे से। जूं मिसल टिक2 चलती रहती है। टिक हुई सेकेंड पास हुआ। अभी तुम बेहद में खड़े हो। दूसरा कोई बेहद में खड़ा नहीं है। कोई को भी बेहद के अर्थात् सृष्टि के आदि,मध्य,अंत की नालेज है नहीं। अभी तुमको फ्यूचर का भी मालूम है। हम नई दुनियां में जा रहे हैं। यह है संगमयुग, जिसको क्रॉस करना है। खाड़ी चैनल है ना। यह है मीठी2 अमृत की चैनल। वह है दुःख की। अभी तुम विख के सागर से क्षीर सागर में जाते हो। यह है बेहद की बात। दुनियां को कुछ भी इन बातों का पता नहीं है। नई बात है ना। यह भी तुम जानते हो (भगवान) किसको कहा जाता है?वह क्या पार्ट बजाते हैं?भगवान के बायोग्राफी को तुम ही जानते हो। टॉपिक में भी तुम बताते हो आओ तो परमपिता परमात्मा के बायोग्राफी तुमको समझावें। कैसे वाह, यूं तो बच्चे बाप की बायोग्राफी सुनाते हैं, कॉमन है। यह तो फिर बापों का बाप है ना। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही जानते हैं। अब तुमको यथार्थ रीति बाप का परिचय देना है। तुमको भी बाप ने दिया है तब तुम समझते हो। और तो कोई बेहद के बाप को जान न सके। तुम भी संगम पर ही जानते हो। मनुष्य मात्र देवता हो वा शूद्र हो ,पुण्यात्मा हो ,पापात्मा हो, कोई भी नहीं जानते। सिर्फ तुम ही ब्राह्मण जो संगमयुग पर हो तुम ही जान रहे हो। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। तब तो गायन भी है अतिइंद्रिय सुख पूछना हो तो इन गोप–गोपियों से पूछो। बाबा बाप भी है, टीचर भी है, सदगुरू भी है। सुप्रीम अक्षर जरूर डालना है। कब2 बच्चे भूल जाते हैं। बाबा को कब लिखने में अक्षर रह जाता है तो बच्चे भी भूल जाते हैं।

फिर चित्र ही चेंज करना पड़े। यह सब बातें बच्चों की बुद्धि में रहनी चाहिए। शिवबााब की महिमा में यह भी अक्षर जरूर डालना है। सिवाय तुम्हारे और कोई तो जानते ही नहीं। तुम समझाय सकते हो गोया तुम्हारी विजय हुई ना। तुम जानते हो बेहद का बाप सर्व का बाप, सर्व का टीचर, सर्व का सदगति दाता है। बेहद का सुख, बेहद का ज्ञान देने वाला है। फिर भी ऐसे बाप को भूल जाते हो। माया कितनी समर्थ है। ईश्वर को तो समर्थ कहते हैं ;पंरतु माया भी कम नहीं। तुम बच्चे अभी एक्युरेट रीति जानते हो। इनका तो नाम ही रखा है रावण। रामराज्य और रावणराज्य। इस पर भी एक्युरेट समझाया है। रामराज्य है तो जरूर रावण राज्य भी है। सदैव रामराज्य तो हो न सके। रामराज्य श्रीकृष्ण राज्य कौन स्थापन करते हैं यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं। कृष्ण के साथ फिर अर्जुन, द्रौपदी 5भाई आदि2 क्या बैठ लिखा है। कितना बिखड़ा है। है कुछ भी नहीं। झूठ माना...झूठ। सर्वशास्त्रमई शिरोमणि गीता गाई जाती है। तुमको भारत खंड की बहुत महिमा करनी है। भारत सच्च खंड था ना। कितनी महिमा थी। बनाने वाला बाप ही है। तुम्हारा बाप के साथ कितना लव है। एमऑब्जेक्ट बुद्धि में है। यह भी जानते हो हम स्टुडेंट हैं। स्टुडेंट को अपनी पढ़ाई का बहुत नशा रहना चाहिए। कैरेक्टर्स का भी खयाल होना चाहिए। विवेक कहते हैं जबकि गॉडली पढ़ाई है तो उसमें एक दिन भी मिस न करना चाहिए और टीचर के आने बाद लेट भी न पहुंचना चाहिए। टीचर के बाद आना यह भी एक इन्सल्ट है। स्कूल में भी जो पिछाड़ी में आते हैं तो उनको टीचर बाहर में खड़ा कर देते हैं। बाबा अपना छोटेपन का मिसाल भी बताते हैं। हमारा टीचर तो बहुत सख्त था। अंदर आने भी नहीं देता था। यहां तो बहुत ऐसे हैं जो देरी से आते हैं। समझना चाहिए बेहद का बाप पढ़ाते हैं और हम देरी से आते हैं;परंतु इतना डर लगता नहीं है ;क्योंकि कोई सजा नहीं है। आपे ही करे सो देवता, कहने से करे सो मनुष्य, कहने से भी जो न करे सो गधा। तुम तो अब देवता बन रहे हो। तो आपे ही पिछाड़ी में बाहर बैठ सुनना चाहिए। बताना चाहिए हमने आपे ही अपन को सजा दी। यहां तो नम्बरवार भी बिठाय नहीं सकते। कितने ढेर बच्चे आते हैं, जो देवता होगा वह आपे ही खयाल करेगा। सर्विस करने वाले भल बाबा के सामने बैठें। सपूत बच्चा जरूर बाप को प्यारा लगता है ना। एक दृष्टांत भी देते हैं। एक सन्यासी ने पूछा . .....सन्यासियों ने भी दृष्टांत सब यहां से कॉपी किये हैं। भ्रमरी का मिसाल भी तुम्हारा है। ईश्वरीय ज्ञान में इन्टरफियर कर दिया है। अब हम किसको कहें। यह हठयोगी राजयोग कैसे सिखलाय सकते। वह तो कहते हैं स्त्री नागिन है। अगर पवित्र रहना है तो जंगल में जाओ। बस। और कुछ नहीं। उनको तो ब्रह्मा को ही याद करना है। नाम ही है ब्रह्मयोगी ब्रह्मज्ञानी। तत्वयोगी। तत्व अर्थात् ब्रह्म का अर्थ एक ही है। जैसे वह आकाश तत्व है वैसे वह ब्रह्म तत्व है अर्थात् रहने का स्थान। अब रहने के स्थान को भगवान तो नहीं कह सकते। हिंदुस्तानी अपन को हिंदू कहते हैं। हिंदू तो धर्म है नही। पत्थर बुद्धि हैं ना। यूरोप का रहने वाला अगर अपना धर्म यूरोप दिखावे तो बाकी क्राइस्ट ,क्रिश्चियन आदि कहां गये?यह तो अपने धर्म का(को) ही भूले हुए हैं। बाप आकर समझाते हैं। पूछा जाता है हिंदू धर्म किसने स्थापन किया?डबे में ठीकरी। अभी तुम समझते हो आदि सनातन देवी देवता धर्म तो यह(देवी देवता) था ना। इनका धर्म कब स्थापन हुआ ,जरा भी किसकी बुद्धि में नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में भी घड़ी2 खिसक जाता है। तुम अब देवी देवता बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। कौन पढ़ाय रहे हैं?खुद परमपिता परमात्मा। तुम समझते हो यह हमारा ब्राह्मण कुल है। डिनायस्टी नहीं होती। यह है सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल। बाप भी सर्वोत्तम हैं ना। उंच ते उंच है। तो जरूर उनकी आमदनी भी उंची होगी। उनको ही श्री श्री कहते हैं। तुमको भी श्रेष्ठ बनाते हैं। तुम बच्चे ही जानते हो कि हमारे को श्रेष्ठ बनाने वाला कौन है?और कोई कुछ भी नहीं समझते। तुम कहेंगे हमारा बाप भी है, टीचर भी है,सदगुरू भी है। हमको पढ़ाय रहे हैं। हम आत्मा हैं। हम आत्माओं को बाबा ने स्मृति दिलाई है कि तुम हमारे सन्तान हो। ब्रदरहुड हैं ना। बाप को याद भी करते हैं। समझते हैं वह हमारा निराकारी बाप है तो जरूर आत्मा

भी निराकार ही कहेंगे। बाबा ने समझाया है आत्मा एक ही शरीर छोड़ दूसरा लेती है। फिर पार्ट बजाती है। मनुष्य फिर आत्मा के बदली अपन को शरीर ही समझ लेते हैं। मैं आत्मा हूं यह भी भूल जाते हैं। मैं तो कब भूलता नहीं हूं। तुम आत्माएं सब ही शालीग्राम। मैं हूं परमआत्मा माना परमात्मा। उनके उपर कोई दूसरा नाम है नहीं। उस परमात्मा का नाम है शिव। हो तुम भी ऐसे आत्मा ;परंतु तुम सब शालीग्राम हो। शिव के मंदिर में जाते हैं बाहर भी शालीग्राम बहुत होते हैं। शिवलिंग की पूजा कराते हैं तो शालीग्राम .....साथ कराते हैं। तब ही बाबा ने समझाया है ताकी तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों की पूजा होती है। हमारी तो सिर्फ आत्मा की ही होती है। शरीर है नहीं। तुम कितना उंच बनते हो। बाप को तो खुशी होती है ना। बाप गरीब होता है। बच्चे पढ़कर कितना चढ़ जाते हैं। क्या से क्या बन जाते हैं। बाप भी जानते हैं तुम कितना उंच थे। अब कितने आर्फन बन गए हो। बाप को ही नहीं जानते। अभी तुम बाप के बने हो तो विश्व के मालिक बन जाते हो। बाप कहते हैं मुझे कहते ही हैं हैविनली गॉडफाद। यह भी तुम जानते हो स्वर्ग की स्थापना हो रही है। यहां क्या2 हागा यह तुम्हारे सिवाय और कोई की बुद्धि में होगा ही नहीं। तुम्हारी बुद्धि में है हम विश्व के मालिक थे। अब फिर बन रहे हैं। प्रजा भी ऐसे कहेगी न। हम मालिक हैं। यह बातें तुम बच्चों की ही बुद्धि में हैं। तो खुशी रहनी चाहिए ना। यह बातें सुनकर। फिर दूसरों को भी सुनानी हैं। इसलिए सेंटर्स ,प्रदर्शनी ,म्यूजियम आदि निकलती रहती है। जो कल्प पहले हुआ है वह ही होता रहेगा। म्यूजियम सेंटर के लिए तुमको बहुत ऑफर करेंगे। फिर बहुत निकल पड़ेंगे। सभी का हड्डियां नरम होती जाती हैं। तुम्हारी योग में कितनी ताकत जबरदस्त है। बाप कहते हैं तुम्हारे में ताकत बहुत है। भोजन तुम योग में रह खाओ, खिलाओ तो बुद्धि इस तरफ खैंचेगी। भक्तिमार्ग में तो गुरूओं के जूठा आदि भी बैठ खाते हैं। तुम बच्चे समझते हो भक्तिमार्ग का विस्तार तो बहुत है। उसका वर्णन नहीं कर सकते। बीज और झाड़ है। इसका वर्णन कर सकते हैं। बाकी कोई को बोलो झाड़ के पत्ते गिनती करो तो कर सकेंगे?नहीं। अथाह पत्ते होते हैं। बीच में तो पत्ते की निशानी भी दिखाई नहीं पड़ती। वंडर है ना। इनको भी कुदरती कहेंगे। जीवजंतु कितने वंडरफुल हैं। अनेक प्रकार के जीव हैं। कैसे पैदा होते हैं बहुत वंडरफुल चीज है। इसको कहा जाता है नेचर। यह भी बना बनाया खेल है। सतयुग में क्या2 देखेंगे वह भी नई चीजें ही होंगी। एवरीथिंग न्यू होता है ना। मोर के लिए तो बाबा ने समझाया है उनको भारत का नेशनल बर्ड कहा जाता है ;क्योंकि श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर का पंख दिखाते हैं। मोर और डेल खूबसूरत भी होते हैं। गर्भ भी आंसू से होता है। इसलिए नेशनल बर्ड कहते हैं। ऐसे पक्षी तो बहुत सुंदर2 विलायत तरफ भी होते हैं। अभी तुम बच्चों को सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का राज समझाया है, जो और कोई नहीं जानते। बोलो हम (आत्माओं) को परमपिता परमात्मा की बायोग्राफी सुनाते हैं। रचता है तो जरूर उनकी रचना भी होगी। उनकी हिस्ट्री–जॉग्राफी हम जानते हैं। उंच ते उंच बेहद बेहद के बाप का क्या पार्ट है यह हम जानते हैं। दुनियां तो कुछ भी नहीं जानती। यह बहुत छी2 दुनियां है। इस समय खूबसूरत से भी मुसीबत है। बच्चियों को देखो कैसे2 भगाते रहते हैं। तुम बच्चों को इस विकारी दुनियां से नफरत होनी चाहिए। यह छी2 दुनियां, छी2 शरीर है। हमको तो अब बाप को याद कर अपने आत्मा को प्योर बनाना है। हम सतोप्रधान थे तो सुखी थे। अब तमोप्रधान बने हैं तो दुःखी हैं। फिर सतोप्रधान बनना है। तुम चाहते भी हो हम पतित से पावन बनें। भल गाते भी हैं पतित पावन.....परंतु नफरत कुछ नहीं आती। तुम बच्चे समझते हो यह छी2 दुनियां है। नई दुनियां में हमको शरीर भी गुल2 मिलेगा। अभी हम अमरपुरी के मालिक बन रहे हैं। बाकी कथायें आदि तो सब झूठी हैं। भक्तिमार्ग में कितनी किताबें गीतायें आदि पढ़ते हैं। मिलता कुछ भी नहीं। पढ़ाने वाले ने तो राजयोग सिखाय विश्व का मालिक बनाया। यह (कथायें) बनाने वाले क्या करते हैं?फिर जो पढ़ाने वाला आये तब हम विश्व के मालिक बनें। अच्छाजी, ओम।